

रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म का समन्वय : एक दार्शनिक अध्ययन

पवन पाठक

असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग

श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय (संघटक महाविद्यालय)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, फाफामऊ, प्रयागराज

शोध सार

भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में भक्ति और अध्यात्म दो ऐसे आयाम हैं, जो मानव जीवन को आंतरिक शांति, नैतिकता और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा प्रदान करते हैं। मध्यकालीन संत परम्परा में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भक्ति और अध्यात्म के अद्वितीय समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस ग्रंथ में भगवान राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से भक्ति, धर्म, मर्यादा और आध्यात्मिकता के मूल्यों का सशक्त प्रतिपादन किया गया है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में भक्ति को केवल भावनात्मक श्रद्धा के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक साधना के रूप में प्रस्तुत किया है, जो मनुष्य को आत्मबोध और परम सत्य की अनुभूति तक पहुँचाती है। यह शोध-पत्र रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि तुलसीदास की दृष्टि में भक्ति केवल ईश्वर की उपासना नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नयन और सामाजिक नैतिकता का मार्ग भी है।

बीज शब्द: भक्ति, अध्यात्म, रामचरितमानस, तुलसीदास, आध्यात्मिकता, भारतीय ज्ञान परम्परा।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति और दर्शन की मूल आत्मा अध्यात्म में निहित है। यहाँ अध्यात्म केवल दार्शनिक चिंतन का विषय नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक समग्र पद्धति है। भारतीय मनीषा ने आत्मा, ब्रह्म और जगत के संबंधों का विश्लेषण करते हुए, मानव जीवन के परम लक्ष्य—मोक्ष—की प्राप्ति के विविध मार्गों का प्रतिपादन किया है। भक्ति, ज्ञान और कर्म—ये तीनों मार्ग भारतीय अध्यात्म के प्रमुख आधार माने जाते हैं। इनमें भक्ति मार्ग की विशिष्टता यह है कि यह सामान्य जन के लिए सर्वाधिक सुलभ है। भक्ति में तर्क की जटिलता न होकर हृदय की सरलता है, शुष्क वैराग्य न होकर सरस प्रेम है।

भक्ति मार्ग विशेष रूप से मध्यकालीन संत परम्परा में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। इसी परम्परा में महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की, जो भारतीय समाज में आध्यात्मिक चेतना के जागरण का महान माध्यम

बनी। तुलसीदास ने वाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर अवधी भाषा में इस महाकाव्य की रचना की, जिससे यह जन-जन तक पहुँच सका। रामचरितमानस में भगवान राम को केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक नायक के रूप में नहीं, बल्कि मर्यादा, धर्म और आध्यात्मिक आदर्श के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है।

व्याख्या

भक्ति का स्वरूप और उसकी अवधारणा

तुलसीदास ने इस ग्रंथ में भक्ति को आत्मिक मुक्ति का सरल और सहज मार्ग बताया है। उनकी दृष्टि में भक्ति और अध्यात्म परस्पर विरोधी नहीं, अपितु एक-दूसरे के पूरक हैं। भक्ति के माध्यम से अध्यात्म की गहराइयों में प्रवेश किया जा सकता है, और अध्यात्म भक्ति को एक दार्शनिक आधार प्रदान करता है। यह समन्वय ही रामचरितमानस की मौलिक विशेषता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास को भक्ति और ज्ञान का समन्वयकर्ता कहा है।¹ इस प्रकार रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म का ऐसा अद्भुत समन्वय मिलता है, जो मानव जीवन को आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक और नैतिक मूल्यों से भी जोड़ता है।

भारतीय दर्शन में भक्ति का अर्थ केवल ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण नहीं है, बल्कि यह आत्मा और परमात्मा के बीच जीवंत सम्बन्ध की अनुभूति है। भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति भज् धातु से हुई है, जिसका अर्थ है—सेवा करना, आराधना करना, समर्पित होना। भक्ति का मूल तत्त्व है—श्रद्धा, प्रेम, विश्वास और आत्मसमर्पण। नारद भक्ति सूत्र में भक्ति को “सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा” अर्थात् परम प्रेम का स्वरूप कहा गया है।² शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में इसे “सा परानुरक्तिरीश्वरे” अर्थात् ईश्वर के प्रति परम अनुरक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है।³

रामचरितमानस में तुलसीदास ने भक्ति को अत्यंत सरल और सर्वसुलभ मार्ग बताया है। उनके अनुसार ज्ञान और तपस्या की कठिन साधना की अपेक्षा भक्ति मार्ग सामान्य मनुष्य के लिए अधिक सहज है। वे कहते हैं—

“बिनु सत्संग हरि कथा नहीं, बिनु हरि कथा न होइ अनुराग।”⁴

अर्थात् सत्संग के बिना हरि कथा नहीं होती और हरि कथा के बिना अनुराग (भक्ति) उत्पन्न नहीं होती। तुलसीदास लिखते हैं कि ईश्वर की सच्ची भक्ति से ही मनुष्य के भीतर आध्यात्मिक जागरण होता है। भक्ति के माध्यम से मनुष्य अपने अहंकार, मोह और अज्ञान से मुक्त होकर परम सत्य की अनुभूति करता है।

तुलसीदास ने भक्ति के तीन प्रमुख रूप बताए हैं—सकाम भक्ति, निष्काम भक्ति और परा भक्ति। सकाम भक्ति में भक्त ईश्वर से सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति की कामना करता है। निष्काम भक्ति में भक्त बिना किसी इच्छा के केवल प्रेमवश ईश्वर की उपासना करता है। परा भक्ति सर्वोच्च अवस्था है, जहाँ भक्त और भगवान में द्वैत समाप्त हो जाता है और अद्वैत की अनुभूति होती है। इस दृष्टि से भक्ति केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि आत्मिक शुद्धि और

आध्यात्मिक उन्नति का साधन है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, “तुलसी की भक्ति में ज्ञान और कर्म का ऐसा समन्वय है कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को पवित्र और सार्थक बना देती है।”⁵

रामचरितमानस में अध्यात्म का दर्शन :

रामचरितमानस में अध्यात्म का स्वरूप अत्यंत व्यापक और गहन है। इसमें आत्मा, परमात्मा, संसार और मोक्ष के विषय में गूढ़ दार्शनिक विचार प्रस्तुत किए गए हैं। तुलसीदास के अनुसार परमात्मा सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान है। वही सृष्टि का मूल कारण और अंतिम सत्य है। मनुष्य का जीवन तभी सार्थक होता है जब वह ईश्वर की भक्ति के माध्यम से अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है। तुलसीदास ने राम को साकार ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित किया है, जो निर्गुण ब्रह्म के ही सगुण स्वरूप हैं।⁶

रामचरितमानस के आध्यात्मिक दर्शन को समझने के लिए उत्तरकाण्ड में वर्णित काकभुशुण्डि-गरुड़ संवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें जीव, जगत और ब्रह्म के संबंधों की विस्तृत व्याख्या की गई है। काकभुशुण्डि गरुड़ को समझाते हैं कि संपूर्ण सृष्टि ब्रह्म का ही विस्तार है और जीव ब्रह्म का ही अंश है। तुलसीदास ने अद्वैत वेदांत के दृष्टिकोण को भक्ति के साथ इस प्रकार समन्वित किया है कि वह सामान्य जन के लिए भी सुगम हो जाता है। वे कहते हैं—

“जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत तिन देखी तैसी।”⁷

अर्थात् भक्त की भावना के अनुसार ही प्रभु का स्वरूप प्रकट होता है। यह भक्ति की महिमा का सूचक है।

रामचरितमानस में अध्यात्म का उद्देश्य संसार से पलायन नहीं, बल्कि जीवन के कर्तव्यों का पालन करते हुए ईश्वर की ओर उन्मुख होना है। यही कारण है कि इस ग्रंथ में आध्यात्मिकता और लोकजीवन के बीच संतुलन स्थापित किया गया है। तुलसीदास ने राम के चरित्र के माध्यम से यह दिखाया है कि एक आदर्श मनुष्य कैसे सांसारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए भी आध्यात्मिक ऊँचाइयों को छू सकता है। राम का वनवास के समय पिता की आज्ञा का पालन, सीता के प्रति प्रेम, लक्ष्मण के प्रति स्नेह, भरत के प्रति कर्तव्य और प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व—ये सभी इस बात के प्रतीक हैं कि सच्चा अध्यात्म संसार से भागना नहीं, बल्कि संसार में रहते हुए ईश्वर को स्मरण रखना है।

भक्ति और अध्यात्म का समन्वय :

रामचरितमानस की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें भक्ति और अध्यात्म का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। तुलसीदास ने भक्ति को केवल भावनात्मक अनुभव तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे आध्यात्मिक ज्ञान का माध्यम बनाया है। उनके अनुसार भक्ति ही वह साधन है जो मनुष्य को अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाती है। वे स्पष्ट करते हैं कि भक्ति के बिना ज्ञान सूखा है और ज्ञान के बिना भक्ति अंधी।⁸

रामचरितमानस के आरंभ में ही तुलसीदास ने कहा है—

“बिनु हरि-कृपा मिलहि नहिं संत। संत कृपा बिनु नहिं भ्रमंता॥”⁹

अर्थात् हरि की कृपा के बिना संत नहीं मिलते और संत की कृपा के बिना हरि की प्राप्ति नहीं होती। यहाँ भक्ति (हरि-कृपा) और अध्यात्म (हरि की प्राप्ति) के अंतर संबंध को दर्शाया गया है। रामचरितमानस में भक्ति के माध्यम से मनुष्य आत्मबोध और ब्रह्मज्ञान की ओर अग्रसर होता है। इस ग्रंथ में यह विचार बार-बार व्यक्त किया गया है कि ईश्वर की सच्ची भक्ति से ही मनुष्य अज्ञान और मोह से मुक्त होकर परम सत्य को प्राप्त कर सकता है।

तुलसीदास के अनुसार भक्ति, ज्ञान और वैराग्य परस्पर विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। भक्ति के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान से वैराग्य उत्पन्न होता है। यह समन्वय ही रामचरितमानस के आध्यात्मिक दर्शन की मूलभूत विशेषता है। तुलसीदास ने इस समन्वय को ज्ञान-प्रदायिनी भक्ति की संज्ञा दी है—ऐसी भक्ति जो स्वयं ज्ञान प्रदान करने वाली हो। वे कहते हैं—

“भगति भागवत ज्ञान विवेका। होइहि संत संग तें एका॥”¹⁰

अर्थात् संतों के संग से ही भक्ति, भागवत ज्ञान और विवेक की प्राप्ति होती है। इस प्रकार रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म का ऐसा समन्वय प्रस्तुत किया गया है, जहाँ भक्ति से अध्यात्म का उदय होता है और अध्यात्म भक्ति को परिपुष्ट करता है।

रामचरितमानस के प्रमुख पात्र : भक्ति और अध्यात्म के प्रतीक

रामचरितमानस के विभिन्न पात्र भक्ति और अध्यात्म के विविध रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि भक्ति का कोई एक निश्चित स्वरूप नहीं है, बल्कि यह भक्त के स्वभाव, क्षमता और आध्यात्मिक स्तर के अनुसार विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हो सकती है।

हनुमान की भक्ति पूर्ण समर्पण और सेवा का आदर्श प्रस्तुत करती है। उनकी भक्ति में अहंकार का पूर्ण अभाव है और वे स्वयं को राम का दास मानते हैं। सुन्दरकाण्ड में हनुमान का चरित्र दास्य भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। वे कहते हैं—

“देह बुद्धि तव दास ममौ, सुनु महासय कह कृपाला॥”¹¹

हनुमान की भक्ति में ज्ञान और शक्ति का अद्भुत समन्वय है। वे महाज्ञानी होते हुए भी पूर्णतः समर्पित हैं। राम से मिलने पर वे कहते हैं—**“प्रभु मैं तुम्हरो दास राम, तुम प्रभु मम जीवन प्राण।”** यह दास्य भक्ति की पराकाष्ठा है।

भरत का चरित्र त्याग, समर्पण और निष्काम भक्ति का प्रतीक है। उन्होंने राजसिंहासन को त्यागकर राम की चरण पादुका को राज्य का प्रतीक माना। भरत की भक्ति वात्सल्य और सख्य भाव की अद्वितीय मिसाल है। चित्रकूट में राम से मिलने पर उनका विलाप और राम के चरणों में निवेदन—ये सभी दृश्य भरत की गहन आध्यात्मिकता को प्रकट करते हैं। भरत ने राम के वियोग में नन्दिग्राम में तपस्वी का जीवन बिताया, जो उनकी भक्ति की गहराई को दर्शाता है।

शबरी की भक्ति प्रेम और श्रद्धा की सच्ची अभिव्यक्ति है। उनकी सरल और निष्कपट भक्ति यह दर्शाती है कि ईश्वर की कृपा पाने के लिए जाति, वर्ग या विद्वता आवश्यक नहीं, बल्कि सच्चा प्रेम और विश्वास ही पर्याप्त है। शबरी ने राम को जो बेर खिलाए, उन्हें चखकर देने की उनकी लीला इस बात का प्रतीक है कि ईश्वर भक्त के प्रेम को महत्व देते हैं, न कि बाहरी आडम्बर को। तुलसीदास ने शबरी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि भक्ति में न तो जाति बाधक है, न ही विद्या।

लक्ष्मण और सीता भी भक्ति और अध्यात्म के विभिन्न आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लक्ष्मण की भक्ति सेवा और सुरक्षा के भाव से ओतप्रोत है। उन्होंने चौदह वर्षों तक राम और सीता की निःस्वार्थ सेवा की। सीता की भक्ति पतिपरायणता और धैर्य का आदर्श प्रस्तुत करती है। रावण द्वारा अपहरण के बाद भी उनका धैर्य और राम के प्रति अटूट विश्वास अद्वितीय है। इन सभी पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने यह स्पष्ट किया है कि भक्ति ही अध्यात्म की वास्तविक आधारशिला है और भिन्न-भिन्न भावों से की गई भक्ति भी परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग है।

रामचरितमानस का सामाजिक और नैतिक आयाम :

रामचरितमानस केवल धार्मिक या आध्यात्मिक ग्रंथ ही नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक जीवन के लिए भी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस ग्रंथ में सत्य, करुणा, दया, सेवा और मर्यादा जैसे मूल्यों को अत्यंत महत्व दिया गया है। भगवान राम का चरित्र आदर्श शासन, न्याय और धर्म का प्रतीक है। तुलसीदास ने राम के माध्यम से एक आदर्श मानव का चित्र प्रस्तुत किया है, जो सभी परिस्थितियों में धर्म और नैतिकता का पालन करता है।

रामराज्य की अवधारणा इस ग्रंथ का एक प्रमुख सामाजिक आदर्श है। तुलसीदास ने रामराज्य को ऐसे समाज के रूप में चित्रित किया है जहाँ सभी वर्गों के लोग अपने-अपने धर्मों का पालन करते हैं, कोई दुखी नहीं है, कोई अभावग्रस्त नहीं है, और सर्वत्र धर्म की स्थापना है—

“बरन धरम निज निज करमाँ। नर नारी हरि भजहि न धरमाँ॥”¹²

रामराज्य की यह अवधारणा आज भी एक आदर्श समाज की संकल्पना के रूप में प्रासंगिक है।

तुलसीदास ने भक्ति को केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना नहीं माना, बल्कि उसे सामाजिक समरसता और नैतिक जीवन का आधार बताया है। उनके अनुसार सच्चा भक्त वही है जो समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है। रामचरितमानस में निषाद, केवट, शबरी और अन्य सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के लोगों को भक्ति के माध्यम से उच्च स्थान दिया गया है। केवट ने राम को नदी पार कराते समय पहले उनके चरण धोए, निषाद ने राम की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। यह सामाजिक समरसता का सशक्त संदेश है।

इस ग्रंथ में नैतिक मूल्यों पर विशेष बल दिया गया है। सत्य, अहिंसा, दया, दान, सेवा—ये सभी मानवीय मूल्य हैं जिन्हें तुलसीदास ने भक्ति के आवश्यक अंग के रूप में प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि बिना नैतिक जीवन के

सच्ची भक्ति संभव नहीं है। राम ने वचन के पालन के लिए राज्य त्याग दिया, भरत ने माता के वचन की रक्षा के लिए राज्य नहीं लिया—ये नैतिकता के उच्च आदर्श हैं। इस प्रकार रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म का समन्वय समाज के नैतिक और सांस्कृतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस की प्रासंगिकता :

आज के भौतिकतावादी और तनावपूर्ण जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का महत्व और भी बढ़ गया है। आधुनिक मनुष्य मानसिक अशांति, नैतिक संकट और सामाजिक विघटन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसी स्थिति में रामचरितमानस का संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह ग्रंथ हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति और आध्यात्मिकता के माध्यम से ही मनुष्य आंतरिक शांति और संतुलन प्राप्त कर सकता है।

रामचरितमानस में वर्णित भक्ति, प्रेम, सेवा और मर्यादा के मूल्य आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। आधुनिक समय में जब परिवार टूट रहे हैं, समाज में वैमनस्य बढ़ रहा है, और मानवीय संबंध कमजोर हो रहे हैं, तब रामचरितमानस में वर्णित पारिवारिक मूल्य, भाईचारा और सामाजिक समरसता के आदर्श अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। राम-भरत का प्रेम, राम-लक्ष्मण का स्नेह, सीता का त्याग—ये सभी आज भी अनुकरणीय हैं।

इसके अलावा, यह ग्रंथ मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। रामचरितमानस का पाठ और मनन मानसिक शांति प्रदान करता है। आधुनिक मनोविज्ञान भी इस बात को स्वीकार करता है कि धार्मिक और आध्यात्मिक आस्थाएँ मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होती हैं। रामचरितमानस में वर्णित भक्ति और समर्पण का मार्ग व्यक्ति को अहंकार, क्रोध और लोभ जैसी मानसिक समस्याओं से मुक्त करने में सहायक हो सकता है। राम-राम का जाप और मानस का पाठ आज भी लाखों लोगों को मानसिक शांति प्रदान कर रहा है।

डिजिटल युग में भी रामचरितमानस की प्रासंगिकता बनी हुई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से यह ग्रंथ दुनियाभर में फैल रहा है और विभिन्न भाषाओं में इसके अनुवाद हो रहे हैं। आज रामचरितमानस न केवल भारत में, बल्कि पश्चिमी देशों में भी अध्ययन का विषय बन रहा है। वहाँ के विद्वान इसमें निहित मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिकता का गहराई से अध्ययन कर रहे हैं। इस प्रकार रामचरितमानस का भक्ति और अध्यात्म का समन्वय आधुनिक वैश्विक संदर्भ में भी एक महत्वपूर्ण संदेश प्रदान करता है।

उपयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म का अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने इस ग्रंथ में भक्ति को केवल धार्मिक भावना के रूप में नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताया है। उन्होंने भक्ति को ज्ञान और कर्म से अलग नहीं किया, बल्कि इन तीनों का समन्वय प्रस्तुत किया है। तुलसीदास की यह विशेषता है कि उन्होंने गूढ़ से गूढ़ आध्यात्मिक तत्वों को भी सरल और सुलभ भाषा में प्रस्तुत किया है।

रामचरितमानस में अध्यात्म जीवन से पलायन नहीं, बल्कि जीवन के कर्तव्यों का पालन करते हुए ईश्वर की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देता है। इस ग्रंथ में भक्ति, ज्ञान और नैतिकता के बीच अद्भुत संतुलन स्थापित किया गया है। राम का चरित्र, हनुमान की भक्ति, भरत का त्याग, शबरी का प्रेम—ये सभी भक्ति और अध्यात्म के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करते हैं। तुलसीदास ने इन पात्रों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि भक्ति का कोई एक रूप नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की अपनी साधना और भावना पर निर्भर करता है।

तुलसीदास का यह ग्रंथ न केवल मध्यकालीन भारत की आध्यात्मिक चेतना का प्रतिबिंब है, बल्कि आज भी उतना ही प्रासंगिक है। यह मानव जीवन को नैतिकता, प्रेम और आध्यात्मिकता की दिशा में प्रेरित करता है। रामचरितमानस का यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की मूलभूत विशेषता रही है, जो विरोधों में समन्वय और विविधता में एकता का संदेश देती है। तुलसीदास ने इसे “सब नर करहिं परस्पर प्रीति” के रूप में अभिव्यक्त किया है।¹³

अंत में, यह कहा जा सकता है कि रामचरितमानस भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अमूल्य ग्रंथ है, जो भक्ति और अध्यात्म के समन्वय के माध्यम से मानव जीवन को एक सार्थक और सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। इसकी शिक्षाएँ सदियों तक मानवता का मार्गदर्शन करती रहेंगी। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, “तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से भारतीय जनमानस को एक नई दिशा दी, एक नई चेतना प्रदान की, जो आज भी उतनी ही ताजा है जितनी सदियों पहले थी।”¹⁴

फुटनोट :

¹ शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 189।

² नारद भक्ति सूत्र, सूत्र 2।

³ शाण्डिल्य भक्ति सूत्र, सूत्र 1।

⁴ गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 33।

⁵ द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ. 156।

⁶ उपाध्याय, बलदेव, भारतीय दर्शन, पृ. 342।

⁷ तुलसीदास, रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दोहा 9।

⁸ तिवारी, रामचंद्र, तुलसीग्रंथावली, पृ. 85।

⁹ तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 36।

¹⁰ तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड, छंद संख्या 47।

¹¹ तुलसीदास, रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड, दोहा 4।

¹² तुलसीदास, रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा 136।

¹³ तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड, दोहा 52।

¹⁴ द्विवेदी, हजारीप्रसाद, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ. 162।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गोस्वामी तुलसीदास — रामचरितमानस (मूल पाठ एवं टीका सहित), गीता प्रेस, गोरखपुर.
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद — हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015.
3. शुक्ल, रामचंद्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2010.
4. उपाध्याय, बलदेव — भारतीय दर्शन, शारदा प्रकाशन, वाराणसी, 2018.
5. पाण्डेय, श्याम मनोहर — तुलसीदास का काव्य-दर्शन, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 2012.
6. तिवारी, रामचंद्र — तुलसीग्रंथावली (संपादित), हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2005।
7. शर्मा, गोविंद — रामचरितमानस में अध्यात्म और दर्शन, अमर प्रकाशन, दिल्ली, 2019.
8. मिश्र, विद्यानिवास — तुलसीदास: व्यक्तित्व और कृतित्व, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017.
9. शास्त्री, महेश — भक्ति आंदोलन और तुलसीदास, काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2014.
10. सिंह, नागेंद्र — तुलसी साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016.

